B.Ed – 2nd Year **Nakul Sah**

Pedagogy of Biological Science **Assistant Professor**

Course- 7 (b)

Lecture - 36

पियाजे

विज्ञान शिक्षा में पियाजे के विचारो की भूमिका

जीन पियाजे का शोध विज्ञान शिक्षण अनेक सम्भावनाएँ रखता है। पियाजे द्वारा प्रस्तुत संज्ञानात्मक विकास की अवस्थाओं का सीधा संबंध पाठ्यचर्चा संरचना तथा शिक्षण विधियो से है जिसमे संप्रत्ययात्मक विकास छात्र की आयु से सवंधित है। प्रो0 पियाजे के कार्य का महत्व उनको ज्ञान भीमांसा में देखना होगा क्योकि पियाजे दार्शनिक पक्ष से आनुभविक स्वीकारा गया है जो मानव में ज्ञान विज्ञान का विकास करना चाहते है। उनका ज्ञान भिमांसा चितंन क्षेत्र दार्शिनिक इमेचुअल कांत से प्रभावित है। इसलिये सामयिक युग में इसे निर्भितवाद कहा जा सकता है आत्मीकरण में पारस्परिक संबंध है इसके मेल के कारण अनुकूल संभव है जो रूपान्तरित संज्ञानात्मक संज्ञा बनाता है यदि इनका मेल नही होता है तो इनमे संज्ञानात्मक संघर्ष होता इनका संतुलन मात्र संतुलनी करण से होता है। जिसे पियाजे ने आत्मीकरण और

NAKUL KUMAR

स्थनीयकरण की अन्योन्यक्रिया कहा है। **पियाजे** के इस मत को सरलता से निमितवाद स्वीकार गया है। पियाजे का ज्ञान अर्जित करने का मत जिसे संतुलनीकरण प्रविधि कहा है।

विज्ञान में निर्मितवाद

निर्मितवाद की उत्पत्ति संज्ञानात्मक मनोविज्ञान क्षेत्र से हुई है निर्मित वादी प्रतिमान जीन पियाजे ले व वाइगोस्तकी जे एस ब्रूनर, हारवर्ड, गार्डनर तथा नेलसन गुडमेन के कार्यो पर आधरित हैं। ज्ञान, डीवी के अनुसार एंव चितंन का महत्तव एंव शिक्षा की आवश्यकताओं से संबधित विचारों का निर्मितवाद पर प्रभाव है इस संदर्भ में अधिगम वह प्रक्रिया है जो किसी व्यवस्था का इसलिए रूपान्तर करती है कि किसी समष्टि से लिये गये कार्यो के परवर्ती निएवाद्न को न्यूनाधिक अपरिचर्तनीय रूप से सुधारा जा सके। निर्मितवाद में प्रत्येक छात्र की सक्रियता से पूर्व ज्ञान एवं नवीन ज्ञान की अन्तक्रिया से ज्ञान की संरचना होती है।

पियाजे ने विज्ञान शिक्षा मे निर्मितवाद का आवश्यक माना यह सिद्धान्त यह मानता है कि ज्ञान का संगनी प्राणियों के बाहर अस्तित्व नही हो सकता है ज्ञान वास्तविकता यथार्थ की संरचना है।

NAKUL KUMAR

निर्मितवाद की मुख्य मान्यता यह है कि ज्ञान बाहर वस्तुगत वास्तविकता में विधमान नही है । सीखने वाला व्यक्ति जब किसी नवीन स्थिति के सम्पर्क में आता है तो उसके पास पूर्व ज्ञान है जो पुराने अनुभवो पर आधारित है उसके सम्पर्क में आता है नवीन ज्ञान की संरचना पूर्व ज्ञान के एकीकरण से होती है। निर्मितवाद पूर्व अधिगम एवं नये अधिगम की अन्त क्रिया के माध्यम से प्रत्येक छात्र के द्वारा ज्ञान की संरचना के महत्व को बल देता है।

निर्मितवाद एक सिद्धान्त है जिसमे व्यक्ति कैसे सीखते है स्पष्ट किया जाता है निमितवाद में शिक्षार्थी अत्यन्त वैयक्तिगत ढंग से ज्ञान का सक्रिय रूप से सृषन एंव पुनर्गठन करते है। इसके लिये इन अस्थायी वैद्धिक संरूपों को सामाजिक सांस्कृतिक संदर्भो मे घटित अपने औपचारिक शैक्षणिक अनुभवों न्यूनाधिक व्यक्तिगत सिद्धान्त तथा वोध के माध्यम के रूप में कार्य करने वाले अन्य अनेक प्रभावों पर आधारित करता है यह समस्त क्रिया स्पष्ट करती है जो जानने वाले की व्यास्थात्मक अन्तक्रिया तथा आनुभविक तथ्य द्वारा संसार को जाना जाता है।

To be continued……

NAKUL KUMAR